श्रद्धांजली प्रवचन

मंगलाचरण

जिनके प्रवचन से होती थी, हर घर में दीपावलियाँ।
आज उन्हीं के श्री चरणों में, चढ़ा रहे सुमनावलियाँ॥
जिनके पावन उपदेशों से, जैन धर्म को पहचाना।
जिनकी पावन वाणी सुनके, महावीर को है जाना॥
जिनके पावन संदेशों ने, हमको दी पावन बतियाँ
आज उन्हीं के श्री चरणो में, अर्पित हैं श्रद्धांजलियाँ
अर्पित हैं, विनयांजलियाँ

प्रिय आत्मन!

जैनधर्म के उत्तर भारत का वह ध्रुव-नक्षत्र, जो पश्चिम में विलय हो गया जिनका नाम मुनि तरुणसागर है। भारतदेश ही नहीं, विश्व में भी जो परिचय के मोहताज नही हैं। जिन्होने अपनी महावीर वाणी के माध्यम से, अखिल विश्व को तीर्थंकर महावीर की देशना का परिचय दिया।

जैनधर्म के सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाया। वह पवनकुमार 26 जून 1967 को जन्मा। अर्थात् मात्र 51 साल रहा। कौन कितना जिया यह महत्वपूर्ण नहीं है। कोई हजारों, लाखों साल जीते हैं लेकिन देश के लिए, धर्म के लिए, संस्कृति के लिए, कुछ नहीं कर पाते हैं। किन्तु धन्य है 13 वर्ष की उम्र में वैराग्य और सन्यास को धारण करके, तरुणसागर जी महाराज ने -

'लीक छोड़ तीनो चले, सायर, सिंह, सुपूत।'

सभी लोग उस धारा में बहते आ रहे हैं, जिस धारा में सब चल रहे हैं। लेकिन तरुणसागर का कहना था -

'बहते पानी की धारा (दिशा) में तो मुर्दा भी चल लेता है। लेकिन पानी की दिशा को चीर करके आगे बड़ना ये किसी साहसी और वीर का काम है।'

तरुणसागर जी महाराज ने इस देश, संस्कृति और समाज के लिए जो दिया, वह शायद ही कोई दे पायेगा। पहले दिया था, लोहाचार्य ने, जिन्होने प्रतिदिन 100 जैन बनाने का संकल्प लिया था। लोहाचार्य का संकल्प था प्रतिदिन 100 जैन बना कर आहार करेंगे। लोहाचार्य के बाद श्रमण परम्परा में दूसरा नाम आता है, तरुणसागर जी का, जिन्होंने इतना महान काम किया है।

जब मै छात्र अवस्था में था तब तरुणसागर जी महाराज प्रत्यक्ष में मेरे विद्यालय मोराजी सागर में पधारे थे। मुझे उनके प्रवचन, आनन्द यात्रा, सब का लाभ मिला, बच्चों में बच्चों जैसे हो जाना और बड़ों पर अपना शासन जमाये रहना।

उनकी अपनी अलग छवि, निराला व्यक्तित्व और असाधारण कृतित्व था। मात्र वह ऊँचा बोलते ही

नहीं थे, वह ऊँचा सोचते भी थे। उनकी स्फुरायमान बुद्धि, सोचने की तीव्र गति, कहने में निडरता, निर्भीकता भी थी। इतना सब कुछ होने के बाद भी, वह जिनशासन के लिए समर्पित थे।

मैंने बुक स्टाल से एक किताब खरीदी थी। तरुणसागर जी की और उसमें मैंने पढ़ा था, रात्रि में भोजन करना मांस खाने के समान है। रात्रि में पानी पीना खून पीने के समान है। मात्र इस वाक्य को पढ़कर मेंने रात्रि भोजन व पानी का त्याग कर दिया था। इसलिए मुनि तरुणसागर जी महाराज मेरे लिए परोक्ष गुरु के समान है,

मुनि तरुणसागर जी महाराज एक प्रभावक संत थे। प्रभावक उपदेशक थे। इस समाज में पन्द्रह सौ तो दिगम्बर साधु, लगभग पन्द्रह हजार श्वेताम्बर साधु और देश में लाखों अन्य सम्प्रदायी संत हैं, लेकिन सबके प्रभावक शिरोमणि यदि कोई रहें, वह सिर्फ एक मुनि तरुणसागरजी है।

जब जैन साधु को गली से गुजरना कठिन होता था तब तरुणसागर गलि में तो क्या, उनके गले में उतर गये। उनके हृदय में उतर गये। कोई किसी का दर्शन करे या न करे, लेकिन सुबह-सुबह सबसे पहले प्रात: श्रवणीय मुनि तरुणसागर महाराज का दर्शन किये बिना नहीं रहता था। चाहे वह किसी भी मत का हो, किसी भी परम्परा का हो, चाहे वह हिन्दू हो, चाहे वह बौद्ध हो चाहे वह सिक्ख हो, चाहे वह मुस्लिम हो, चाहे वह जैन हो, चाहे वह जैनेतर हो कोई भी हो, सब को एक को ही सुनना है मुनि तरुणसागर !

T. V. के माध्यम से जैन धर्म को, जैन संदेश को, जैन साधु की छवि को जगत के जो सामने लाये। और जो पहले दिन जिस छवि के साथ आये, आखरी दिन तक उसी निर्मल छवि के साथ यशस्वी छवि के साथ, कीर्तिमान छवि के साथ आगे बढ़ते रहें। उनके जीवन में कोई ब्रेक नहीं है, संयम की राह को मजबूती से पकड़े रहे, उन्हें कोई रोक नहीं पाया। जहाँ जिस प्रदेश में पहुँचना है, पहले राजकीय अतिथि का दर्जा प्राप्त किया। ये मात्र उनका सम्मान नहीं था, ये पूरे जैन समाज का सम्मान था। जैनधर्म की पहचान थे, जैन संतो का अभिमान थे, जैन समाज का सम्मान थे, तरुणसागर जी !

प्रिय बंधुओ-

जैन समाज के ऊपर जब कोई भी, आपदा जैसी स्थिति बनती थी, तो उसे सम्हालने के लिए मुनि तरुणसागर का आश्रय लिया जाता था।

समस्या की चिंता कोई दूसरा न करे, तरुणसागर बैठा है। एक बार जब मयूरपंख प्रतिबंध कानून की बात आई तो आचार्य विरागसागर जी ने संदेश दिलाया तो तरुणसागर जी बोले, आप चिंता मत करो मैं बैठा हूँ। यानि तरुणसागर का मतलब ये था कि जब तक तरुणसागर जिन्दा है, तब तक किसी भी दिगम्बर साधु को किसी भी तरह की सोचने की आवश्यकता नहीं है चाहे संथारा का हो, चाहे पिच्छी के पंख पर हो, या अन्य प्रकरण हो। शासन संबन्धी किसी भी तरह की समस्या हो, उसके लिए तरुणसागर तत्पर रहते थे।

तरुणसागर सिर्फ अपने लिए ही नही जिये। देश में अधिकांश लोग अपने लिए जीते हैं, कुछ लोम अपने परिवार के लिए जीते हैं, कुछ अपनी समाज के लिए जीते हैं, कुछ अपने गाँव के लिए जीते हैं। कुछ लोग अपने नगर और प्रदेश के लिए जीते हैं, कुछ लोग देश के लिए जीते हैं। लेकिन तरुणसागर एक ऐसा संत रहे, अपने लिए नहीं जिये, जो सम्पूर्ण देश, धर्म, संस्कृति के लिए जिये।

जब तक जिये, उन्होंने जैनधर्म के लिए बहुत कुछ किया, और अंतिम-अंतिम श्वास तक पूरे जनता

जनार्दन को मंगल आशीर्वाद देते हुए इस देश से विदा हुए। सब को क्षमा, सबसे क्षमा, आज तक इस देश का पानी मैंने पिया, सो जिनवाणी दी। आज तक अन्न जल लिया, अब मैं जल का भी त्याग करता हूँ ।

जब तक लिया, तब तक दिया
पानी लिया, और वाणी दी
अन्न लिया, और आनंद दिया।

इस समाज के लिए वह एक इंसान इस धरती पर क्या था ? पास में मात्र एक पिच्छी, कमण्डलु। लेकिन जहाँ पर भी जाना, सिंह की तरह निर्भीक बढ़ते जाना और इसके लिए उन्होंने कितने संघर्ष झेले। क्योंकि जो महानता की ओर बढ़ते हैं। उनके जीवन में स्वत: अपने आप शत्रु भी बन जाते हैं। लेकिन उन्होंने उस कठिन आपदा को भी झेला, जबकि उनके आहार में पारा आ गया था। लेकिन उस बीमारी से निजाद पाई। ऐसी बड़ी समस्या से पार होकर के आप आगे बढ़े और तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी का आशीष ! आ हा ! कैसी श्रद्धा थी आपकी सन्मतिसागर के प्रति, सन्मतिसागर जी दिया फल मंत्रित करके यंत्र दिया।

गोमटेश्वर में जब विश्व प्रसिद्ध महा मस्तकाभिषेक चल रहा था और प्रमुख वक्ता के रूप में जब आप मंच पर आते थे तब आपको किसी भी नंबर पर बुलावा दिया जाये, पब्लिक सिर्फ तरुणसागर को सुनना चाहती थी, एक दिन भी ऐसा नहीं रहता था, जिस दिन सभा मण्डप प्रतीक्षा न कर रहा हो।

जिनशासन का वह सरताज, जैन शासन का मुकुट, जैन शासन का वह महापुरुष, जैन शासन का गौरव पुरुष, जैन संतो का महारथी, जैन शासन का वह दैदीप्यमान नक्षत्र प्रभावना का सूर्य अस्त हो गया। लेकिन उनकी कीर्ति, उनका यश, उनकी प्रतिष्ठा, उनका सम्मान, उनका यशोगान इस संसार में सदा, सर्वत्र बना रहेगा चाहे भोपाल का दशहरा मैदान हो, चाहे इन्दौर का राजबाड़ा हो, किसी भी देश का प्रसिद्ध स्थान,दिल्ली का लाल किला हो, जब उन्होने 21वीं शताब्दी का प्रथम दिवस लाल किले पर अहिंसा रेली के माध्यम से आयोजित किया। तब पूरा देश एकत्रित था।

पूरे देश की आवाज तरुणसागर के साथ थी, तरुणसागर पूरे देश के संतो को साथ लेकर चल रहे थे, तरुणसागर को लाल किले से तब सुना, कोई भी प्रदेश हो, मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक कौनसा प्रदेश अछूता रहा। जहाँ तरुण सागर जी ने अपनी कला और कलम से, जिनशासन को रोशन न किया हो।

इस पुद्‌गल काया में बसने वाला भावी परमात्मा इस मिट्‌टी की देह में मानवता का संदेश सिखाने वाला, जिनके अन्दर जन्म से ही दया, करुणा, प्रेम, भाईचारा का संदेश, पूज्यों के प्रति उतनी ही विनय छोटों के प्रति वात्सल्य, इतना सब कुछ होने के बाद जिन्हें अहंकार कभी नहीं छू पाया।

अनुशासन के लिए बहुत कुछ कहना पड़ा, ये बात अलग है, लेकिन अहंकारवश उन्होने कभी कुछ भी नहीं कहा। जिन्होने कड़वे प्रवचन के माध्यम से संदेश को इस तरह से दिया कि लोगों के हृदय तक उतर जाये। दो चार लोगों को नहीं आर.एस.एस. के उन लाखों स्वयं सेवकों को, चमड़े के बेल्ट से मुक्त किया, यानि जिनकी सभायें एक संदेश देती थी, जो सिर्फ महान काम को हाथ में लेते थे और बड़ी महानता से करते थे। किसी भी कार्य की योजना और प्रणाली, जिनके मस्तिष्क में वर्षो पहले आ जाती थी। जो तत्काल के लिए नहीं बैठते थे, जितना व्यक्ति तत्काल सोचते थे, तरुणसागर उस बात को वर्षों पहले से सोचा करते थे। ऐसे

तरुणसागर जी महाराज, प्रज्ञासागर महाराज दोनों की जोड़ी एक समय मानो पुष्पदंत और भूतबलि जैसे दो वीर श्रमण चले आ रहे हों।

तरुणसागर, पुलकसागर, ऐसे-जैसे अकलंक और निकलंक चले आ रहें हों। जो प्रभावना कभी अकलंक और निकलंक ने की है वह प्रभावना तरुणसागर और पुलकसागर देश में करते रहे, और जिन्होने अपने तन पर ध्यान नहीं दिया।

अभी मैं आचार्य पुष्पदन्त सागर जी के साथ चल रहा था, मैंने कहा महाराज श्री आप इतना तेज चलते हो, इतनी गर्मी है। आचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी बोले - तांगे में जुता घोड़ा है, उसे गर्मी क्या ? उसे सिर्फ इतना पता है, दौड़ना है-चलना है, चलो गुरु ने जो अभ्यास कराया था।

तरुणसागर जी में वही तीक्ष्ण प्रज्ञा, वही तर्कणा शक्ति, वही कौशल और उससे भी आगे, गुरु का हृदय तो तब प्रफुल्लित होता हैं जब शिष्य उनसे आगे हो। पिता का हृदय तब प्रफुल्लित होता हैं, जब पुत्र का कद उससे आगे हो। तरुणसागर जी महाराज ने 2006 में गोमटेश्वर के अभिषेक में पूरे विश्व के लिए जैन संतो का आदर्श परिचय दिया। ऐसे तरुणसागर जी महाराज, अंतिम दिन 36 घण्टे पहले, खुले मैदान से सबको मंगल आशीर्वाद दिया सब को क्षमा, सबसे क्षमा, सबको 'आशीर्वाद' 6 घण्टे पहले की मुद्रा, बैठे-बैठे मंगल आशीर्वाद दिया। उन्होने जो-जो संदेश जहाँ-जहाँ के लिए दिए हों, वो संदेश संभालके रखो।

प्रिय बंधुओ !

अभी तक उन्होने संभाला है, अब आप कैसे संभालेंगे ? उस सोच को पैदा करिए ? पिता की पगड़ी पुत्र के माथे पर रखी जाती है। अभी तक तरुणसागर जी धर्म की बागड़ोर को आगे लेकर चलते थे, विवादों को निपटाये रहे और विवादों में फसे नहीं स्वयं र्निविवाद रहे और सब के विवादों का हल करते थे।

किसी के भी प्रश्नों के उत्तर देने में झिझके नहीं। लोग क्या कह रहे हैं, इसकी परवाह नहीं की। चाहे आपकी अदालत हो, चाहे भगवान महावीर को मैं चौराहे पर देखना चाहता हूँ। उनके जो संदेश थे, उनकी जो चिन्तन धारा थी, उनकी जो सोच थी, व्यक्ति कैसा सुनकर के अपने दिमाग में रख सकता है। क्योंकि सीधा-सीधा सुनायेंगे, तो व्यक्ति नहीं रख पायेंगे।

आपको सोचने के लिए कैसे मजबूर किया जा सके ? आदमी को सोचने के लिए मजबूर करने का तरीका उनके पास था, गोमटेश्वर में आचार्य श्री विरागसागर जी ने पूछा तरुणसागर ! आप ये सब कैसे करते हो ? बोले महाराज **"में सिर्फ दो चीज जानता हूँ, एक तो आदमी की नब्ज पकड़ता हूँ, और दूसरा समय की नब्ज, कौनसा आदमी क्या कर सकता है ? और कौनसा आदमी क्या चाहता है ? उससे वह करा लेना। कौनसा व्यक्ति क्या चाहता है, उसको वह दे देना, लेने वाले से ले लेना और देने वाले को दे देना, ये उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी"।** उनको सभा में पहचान थी कि, कौन लेने आया, कौन देने आया है। लेने वाले से भरपूर मात्रा में लेना और देने वाले को दे देना, एक संत के रूप में हमने सुना था कि अकलंक स्वामी ने जिनशासन को महकाया था, 'तिरूवल्लराचार्य' ने कभी जिनशासन को महकाया था।

लेकिन देखने में तो तरुणसागर को ही देखा है। हम उन तरुणसागर जी महाराज को जितना भी याद करें उतना कम है। तरुणसागर जी महाराज जब गोमटेश्वर में खड़े हो गये, बाहुबली के चरणों में और एक फोटो उनकी खिंची तो पूरे देश में बाहुबली और तरुणसागर जी ऐसे लग रहे थे, जैसे नेमिचन्द्राचार्य आके खड़े हो गये

हों, पूरे देश को दिखाई दे रहे थे।

प्रिय आत्मन!

दिगम्बर संतो के लिए, एक वरदान बनकर गये। दिगम्बर संतो के लिए, एक शान बनकर गये, और समूची धरती के भगवान बनकर गये। हिन्दु राम मानते होंगे, गीता को मानते होंगे, मुस्लिम कुरान को मानते होंगे। जैन महावीर को मानते होंगे, लेकिन सबके बीच में ये कहा जाये कि पूरा देश और पूरा विश्व किसी को मानता था तो सबके दिल में तरुण सागर भगवान के रूप में थे।

हो सकता है कि हिन्दू के घर में गीता मिले अथवा न मिले और जैनों के घर में पद्मपुराण मिलें अथवा ना मिले, मुस्लिम के घर में कुरान मिले या ना मिले, लेकिन तरुणसागर जी के कड़वे प्रवचन जरूर मिल जायेंगे।

इस तरह से उन्होने अपने कार्य को बढ़ाया, चाहे वह गिनीज बुक में नाम हो, वर्ल्ड रिकार्ड एक बन गया तो शांत नहीं बैठते थे। दूसरा रिकार्ड बनाना, तीसरा रिकार्ड बनाना, व्यक्ति दूसरे के रिकार्ड तोड़ता था, लेकिन तरुणसागर जी अपने रिकार्ड तोड़ते थे और अपना नया रिकार्ड बनाते थे। फिर एक नया रिकार्ड, फिर एक नया रिकार्ड, उनके एक दो रिकार्ड नहीं, उनका गिनीज बुक में एक दो बार नाम नहीं है। कोई व्यक्ति एक बार नाम पाने का प्रयत्न करता है, तात्पर्य ये नहीं कि वह नाम के लिए बहुत कुछ करते रहे, मतलब ये है कि-

उन्होने जैनों के सम्मान को आगे बढ़ाया, कार्य के बिना नाम नहीं होता, कार्य करने की शैली जिनके पास होती है वह उस नाम को पाते हैं। तरुणसागर जी महाराज अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक, चाहे वह गुरु पूर्णिमा का पर्व हो, चाहे रक्षाबंधन का पर्व हो, इस देश के लिए बहुत कुछ देते रहे, लुटाते रहे।

प्रिय बंधुओ-

जितना वह दे गये हैं, उतना हम कैसे सम्भाल कर रखें, आज यह चिंतन का विषय है। उनका ध्येय धर्म को रोशन करना था, उनका ध्येय यह नहीं था कि हम संघ को बढ़ायें या सिर्फ हम सीमित दायरे में रह जायें। उनका था बहुआयामी व्यक्तित्व बहुआयामी कृतित्व। वह जन संत के रूप में इस ध ारती पर चर्चित थे। किसी ने पूछा महाराज आप अपने नाम के आगे 108 क्यों नहीं लिखते? सहज में बोल दिया, लिखना मेरा काम नहीं है, आपका है, लिखिए?

प्रिय बंधुओ-

एक वक्त की रोटी और एक वक्त का पानी, सिर्फ इतने पर जैनधर्म का इतना महान प्रचार-प्रसार कर लिया। मुनि श्री तरुणसागर की एक-एक श्वास उनके बलिदान की तरह थी, एक-एक श्वास, एक-एक शब्द, जिन शासन की रक्षा के लिए ढाल था। इस तरह से उन्होने जितना किया, जो किया, अब आपके ऊपर है कि आप उनके संदेश को जीवन में अपना लें। यही उनके लिए श्रद्धांजली होगी।

हम बहुत याद कर सकते हैं। क्योंकि उनके 38 साल साधना काल को, हम 38 मिनिट में कहाँ तक बाँध पायेंगे। लेकिन उनका एक भी संदेश, यदि हमारे जीवन में उतर सका तो हमारी श्रद्धांजली सार्थक हो

जायेगी, वह तो कहते-कहते, चिल्लाते-चिल्लाते आपके बीच से चले गये। कह गये, रात्रि में भोजन करना मांस खाने के बराबर है, रात्रि में पानी पीना खून पीने के समान है। अब आपके ऊपर है, आपको क्या करना है। संदेश दे गया, चला गया। व्यक्ति चला जाता है, उसके विचार रह जाते हैं, इंसान निकल जाता है, पाँव के चिन्ह रह जाते हैं। महापुरुष चले जाते हैं, संदेश छोड़ जाते हैं, उनके पद चिन्हों पर आप कैसे चलें ? और कैसे महानता को हासिल करें ?

उन जैसी नीति, उन जैसी निर्भिकता,उन जैसी श्रेष्ठता कैसे हासिल करें। धन्य हैं, उन्होने कभी बच्चों के लिए, मम्मी-पापा के लिए,कैसी-कैसी कविताओं के माध्यम से आकर्षित किया। उन तरुणसागर जी की इस श्रद्धांजली सभा में, अंदर के आसूँ उमड़ते हैं।

जिनशासन के लिए श्वासों का बलिदान देने वाला जिनशासन का अमर आत्मा, जिनशासन का महान आत्मा, जैनधर्म का एक दैदीप्यमान सूर्य इस तरह से देखते-देखते हम सब के बीच से अस्त हो गया। जब तक होते हैं तब तक हम उनमें कमी निकाल लेते हैं लेकिन अब वे नहीं हैं इस कमी की पूर्ति कौन करे ? जब तक वे थे, लोगों ने कमी भी निकाली, लेकिन अब उनकी कमी है, उस कमी की पूर्ति कोई कर सकता है क्या ? बोलो ? कोई कर सकता हो तो बताये।

प्रियबंधुओ !

एक की कमी दूसरा पूर्ण नहीं कर पाया पूरी। पारसनाथ की कमी को महावीर पूरा नहीं कर पाये, आदिनाथ की कमी को शांतिनाथ पूरा नही कर पाये। कोई एक दूसरे कि कमी को पूरा नहीं कर पाता है, क्योकि चेतना भिन्न-भिन्न है।

आत्मा भिन्न-भिन्न है। हाँ, पुदगल वस्तु होती तो अलग बात थी कि एक पेन गुमने पर उसी कम्पनी का दूसरा पेन तुम्हें दे देते, एक गाड़ी गुमने पर दूसरी गाड़ी तुम्हे दे देते। एक वस्तु गुमने पर (सेम टू सेम) वही वस्तु ला सकते लेकिन इंसान की कमी पूरी नही की जा सकती। क्योंकि उसकी काई फोटोकॉपी नही। हाती है, उसकी कोई प्रतिलिपि नहीं की जा सकती है, अभी तक उन्होने इस मानव लोक को पवित्र किया है। अब वह दिव्यात्मा दिव्य लोक पावन करने पहुँच गई, अभी तक मानव समाज के लिए उसकी जरुरत थी।अब उनकी जरुरत देवताओं के लिए है, शायद देवता तरस रहे थे कि तुमने मानव समाज को बहुत कुछ दिया है। हे तरुणात्मा ! तेरी आवश्यकता तो स्वर्ग के देवताओं के लिए भी है क्योंकि देवता उस जिनवाणी से अछूते है, जो तू प्रदान करता है, इसलिए मुझे लगता है, शायद देवताओं को संदेश देने के लिए गये हैं।

अभी तक उन्होने इस धरती पर संदेश दिया है, अब वह स्वर्ग के देवताओं को संदेश देने के लिए स्वर्ग में आरोहण कर चुके हैं। अब उनका संदेश स्वर्ग लोक के देवताओं को मिलेगा, धन्य है ऐसे पावन-पवित्र पूतात्मा तरुणसागर जी महाराज, ब्रह्ममुर्हूत, ब्रह्मा का मुर्हूत परमात्मा का मुर्हूत होता है, 3 बजकर 18 मिनिट उसी समय तो जागते थे। जागरण की बेला में जागते हुए, जगाते हुए ! इस देश को जगाकर चले गये, धन्य है प्रभु ! जागरण की बेला में, जागते चले गये, देश को देह सौप गये। आत्मा ले गये, शरीर सौप गये। संस्कार ले गये, धन सौप गये। साधना ले गये, साधन सौप गये। चेतन ले गये, तन सौप गये। वह दिव्यात्मा तरुणसागर जी महाराज और उनके गुरु पुष्पदंतसागर महाराज धन्य हैं। वह पुष्पदंतसागर जी महाराज जिन्होने इतना महान संत इस देश को दिया, उनसे पूछिए, जिस पिता का लाड़ला बेटा, उसके जीते जी चला जाए, आखिर पुष्पदंतसागर जी के दिल पर क्या बीत रही होगी ?

उस भाई से पूछिये, जिस भाई के साथ हमेशा रहा हो, पुलकसागर और प्रज्ञासागर जिनकी जोड़ी थी। अभी हम पुलकसागर से मिले वह बतला रहें थे, तरुणसागर जी महाराज जब एक साथ थे, तो पुष्पदंतसागर जी ने एक दिन कहा अब आप दोनों को अलग-अलग विहार करना है तो पुलकसागर जी ने कहा- महाराज क्या हमसे कोई अपराध हो गया है। तरुणसागर जी ने कहा, मुझसे कोई गलती हो गई है? आपसे किसी ने कोई शिकायत की क्या ? बोले न हमारी शिकायत है, न तुम्हारी शिकायत है, ये तो गुरु की परीक्षा की है।

प्रिय आत्मन् !

धन्य है वह जिनशासन के महारथी तरुणसागर जी महाराज सदा तरुण ही रहेंगे, वह कभी वृद्ध नही होंगे। वह सदा युवा ही रहेंगे, वह युवाओं के दिल की धड़कन है, युवाओं के दिल में धड़कते रहेंगे, वह सदा आपके संदेश, शाकाहार, अहिंसा की मिसाल कायम करेंगे और उन्होने जो दिया है, उन संस्कारो को, संदेशों को, संकल्पों को हम मजबूती से दृढ़ता से पालन करें तो हमारा जीवन नि:सन्देह महान बनेगा। श्रद्धांजली का मतलब है कि उनके सन्देश को अपनाना यही श्रद्धांजली है, और आज ऐसे पावन मुनिराज तरुणसागर जी महाराज के श्री चरणों में, सिद्ध श्रुत भक्ति पूर्वक नमोस्तु निवेदन करते हुए -

हे पावन आत्मन! तुमने जिस तरह से जिनशासन को उज्ज्वल बनाया और अपनी आत्मा को अमर बनाया, इस मानवता को पावन संदेश दिया, इस मानवता को क्षमा करते हुए और स्वयं क्षमा मांगते हुए अन्न जल का त्याग करके इस लोक से दिव्य लोक की यात्रा की। हे पावन आत्मा! इस श्रृष्टि का प्रणाम हो। इस सृष्टि का नमन हो, आप जैसे महापुरुष इस धरती पर बारम्बार आयें और जिनशासन को जयवंत बनायें। हम सबके पथ प्रदर्शक बनें, आप जागरण में आयें, और स्वप्नों में आते रहें। सबको सन्मार्ग देते रहें, आप जैसे परोपकारी पुरुष इस, धरती के लिए जब भी मिलेंगे, यह धरती आप जैसे महापुरुषों के कारण ही, रत्नगर्भा कहलाती रहेगी।

हे धरती के महारत्न, तुमको मेरा वंदन है,
तेरे चरणों की पूजा में, अर्पित अक्षत चंदन है,
तेरे यादों में अर्पित यह, लाया हूँ सुमनावलियाँ,
भक्ति भाव से करूँ समर्पित, तरूण सिंधु श्रद्धांजलियाँ।

हे श्रद्धा के देवता! दया के मसीहा! करुणा के स्रोत-
अहिंसा प्रेमी राष्ट्र संत तुमको नमन अनंतानंत् जिओ और जीने दो-

संदेशा जो दिया अमर
जयवंत रहे भारत भू पर
संत तरुणसागर यतिवर
नमन तरुणसागर मुनिवर॥

ऐसे तरुणसागर महा मुनिराज के स्मरण मैं एक बार आप लोग बोल दीजिए।

जैनों का सम्मान बढ़ाया, बोलो तो वह कौन हैं?
संतों को सम्मान दिलाया, बोलो तो वह कौन हैं?
तरुणसागर मुनिराज हैं, तरुणसागर मुनिराज हैं।

जैनों की आवाज हैं, जैनों की आवाज हैं,
तरुणसागर मुनिराज हैं, तरुणसागर मुनिराज हैं॥
राष्ट्रसंत पदवी को पाया, बोलो तो वह कौन हैं?
लाल किले पर बिगुल बजाया, बोलो तो वह कौन हैं?
धर्म अहिंसा ध्वज फहराया, बोलो तो वह कौन हैं?
शाकाहार प्रवर्तन लाया, बोलो तो वह कौन हैं?
तरुणसागर मुनिराज हैं, तरुणसागर मुनिराज हैं।
जैनों की आवाज हैं, संतो के सरताज हैं,
तरुणसागर मुनिराज हैं, तरुणसागर मुनिराज हैं॥

एक सितम्बर 3 बजकर के 18 मिनिट पर वह दिव्यात्मा इस मानव लोक से स्वर्ग लोक में देवताओं को संदेश देने के लिए प्रवेश हुआ। देवलोक में, देवताओं ने अभिनन्दन किया उनके चरणों में पुनः-पुनः सिद्ध भक्ति, पूर्वक बारम्बार प्रणाम करता हूँ। नमोस्तु करता हूँ।

हे पवित्रात्मा मुम्बई सकल समाज ही नहीं, भारत भूतल समेत इस मानव लोक की सृष्टि मात्र का नमन स्वीकार करो।

हे दिव्यात्मा तुम्हें नमन । पुनः पुनः देना दर्शन॥

ॐ नमः

तुमने कितना दिया है, मुनिवर कितना याद करूँ,
सदा-सदा जयवंत रहो, तुमसे ये फरयाद करूँ।
संस्कृति के प्राण-प्रतिष्ठा, सदा अमर नर हो,
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हों।
तेरी छत्रछाया भगवन् मेरे सिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।
फूल अर्चना के लिए, हे श्रद्धा के देव।
चरण कमल अर्पित करूँ, तरुणसागर गुरुदेव॥

॥ श्री तरुणसागर मुनिवरेभ्यः नमः॥

क्रांतिकारी संत मुनि तरुण सागर के लिए समर्पित

तरुण श्रद्धांजलि

आचार्य विभव सागर

क्रांतिकारी संत मुनि तरुण सागर जी महाराज के समाधि महोत्सव पर 01 सितम्बर 2018 को आचार्य विभव सागर महाराज ने मुम्बई में दी श्रद्धांजलि

तरुण श्रद्धांजलि

डा. सारस्वत कवि श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

श्रमण श्रुत सेवा संस्थान